International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 15-06-2020; Accepted: 30-06-2020; Published: 16-07-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 129-131

भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में असगर वजाहत की कहानियाँ

माला कुमारी
शोध–छात्रा, हिन्दी विभाग, ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश
हिन्दी के अधिकांश रचनाकारों ने अपने लेखन में भूमण्डलीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति, बाजारवाद, मीडिया आदि के प्रभाव को अभिव्यक्त किया है। अगसर वजाहत ने अपनी कहानियों में भूमण्डलीकरण से प्रभावित सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न विषयों के विकृत रूप को उकेरा है। इन्होंने अपनी कहानियों में दिखाया है कि किस प्रकार भूमण्डलीकरण ने निम्न वर्ग के लोगों को और हाशिये पर धकेल दिया है, जो एक तंग जिंदगी जीने को विवश है। उनकी सबसे बड़ी विशेषता है कि उन्होंने समाज के गंभीर से गंभीर मुद्दों को भी बहुत ही कम शब्दों में व्यक्त करने का सार्थक प्रयास किया है, इनकी कई कहानियों में भूमण्डलीकरण के विकृत रूपों को दर्शाया गया है।

मूल शब्द: समकालीन, भूमण्डलीकरण, बाजारवाद, संस्कृति

प्रस्तावना
समकालीन समाज में हो रहे तेजी से बदलाव के भूमण्डलीकरण के संदर्भ में देखा जा सकता है। समकालीन समाज भूमण्डलीकरण के प्रभाव में आगे बढ़ रहा है। वैश्वीकरण, भूमण्डलीकरण का नाम इस समय बहुत चर्चित है। भूमण्डलीकरण का सामान्य अर्थ है, पूरी दुनिया एक विश्वग्राम है। स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्वस्तर पर रूपान्तरण की प्रक्रिया वैश्वीकरण कहलाती है। वैश्वीकरण सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और तकनीकी ताकतों के एक संयोजन की प्रक्रिया है। डॉ. अमरनाथ ने भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया के पीछे अमेरिका का हाथ माना है। उनके अनुसार– ''यह शब्द बीसवी सदी के अंतिम दशक में व्यापक रूप में प्रयोग में आया 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद जब दुनिया एक ध्रुवीय हो गयी और अमेरिका के नेतृत्व में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने दुनिया के खासतौर पर तीसरी दुनिया के बाजार पर कब्जा जमाना शुरू किया तो इसे न्याय संगत ठहराने के लिए भूमण्डलीकरण जैसा आकर्षक नाम दिया गया।''(1) भूमण्डलीकरण का अर्थ है कि विश्व की सभी अर्थव्यवस्थाओं को जोड़कर एक नई अर्थव्यवस्था और संस्कृति का निर्माण करना है। जिससे नई उपभोक्तावादी संस्कृति और मूल्यों का जन्म हुआ। हिन्दी के रचनाकारों ने भूमण्डलीकरण बाजारवाद, उपभोक्तावादी संस्कृति, मीडिया, आर्थिक उदारवाद के प्रभाव आदि के संबंध में गतिरोध–प्रतिरोध के आवाजों को अपनी रचनाओं में व्यक्त करने की कोशिश की है। हिंदी के अधिकांश लेखक भूमण्डलीकरण को नव पूँजीवाद का अंग मानते हैं। नव पूँजीवादी अवधारणाओं ने हमारी संस्कृति, प्रकृति, भाषा, अस्मिता, परम्परा पहचान आदि जीवन मूल्यों को नष्ट एवं निरर्थक साबित कर दिया है।

आदमी आज एक अजीब उलझन भरी जिंदगी जी रहा है। हर आदमी अपनी जिंदगी को अधिक खूबसूरत, अधिक सम्पन्न और अधिक सुरक्षित बनाने के लिए न जाने कितनी बार मरता है। वैश्वीकरण के इस दौर में मानव के स्वप्न लोक की मायाजाल उन्हें हर जगह घेरे हुए हैं। मानव मन की अभिलाषाओं की कोई सीमा नहीं होती है, एक इच्छा पूर्ण होती है तो दूसरी जागृत होने लगती है, फिलहाल मानव की भौतिक इच्छाऐं इस जीवन में कभी पूरी नहीं हो सकती और न ही वे कभी मानव के अर्न्तआत्मा को सच्ची खुशियाँ दे सकती है। वैश्वीकरण और बाजारवाद की इस दुनिया में सबकुछ भ्रामक है। हम आज भूमण्डलीकरण के माहौल में है। जिसके कारण प्रौद्योगिकी और विज्ञान के क्षेत्र में नए–नए आविष्कार हो रहे हैं। दुनिया में हो रही घटनाओं की सूचना हम तक जल्द ही पहुँच रही है। जिसका श्रेय जनसंचार तंत्र को जाता है, भूमण्डलीकरण के इस दौर में जहाँ नित नये बदलाव हो रहे है। साहित्य भला इससे अलग कैसे रह सकता है। इन सब बातों की सूक्ष्म पड़ताल हमें असगर वजाहत की कहानियों में भी मिलती है।

उपभोक्ता संस्कृति एवं बाजारवाद समकालीन समाज की सबसे ज्वलंत मुद्दे हैं। इस विषय पर विचार करने पर असगर वजाहत की कहानी 'तमाशे में डूबा देश' को देखना प्रासंगिक होगा। इस कहानी में दो घटनाएँ एक साथ चलती है, हमारे देश की एक शहर में एक आदमी गुम हो जाता है, और दो कुत्ते के पिल्ले गुम हो जाता है। गुम होने वाले आदमी भारत का एक बहुत ही मामूली और गरीब नागरिक है, और जबकि कुत्ते विदेश से आयातित है। जिसका मालिक मंत्री–पुत्र है। जाहिर है कुत्ते आदमी से कहीं अधिक मूल्यवान है। कुत्तों को ढूँढ़ने से लेकर मिलने तक की प्रक्रिया में पुलिस–प्रशासन की भूमिका हास्यास्पद स्तर तक पहुँचती है, मीडिया की प्रतियोगिता वृत्ति के साथ विश्वस्तर पर अमेरिका की वर्चस्ववादी नीति को लागू करने के हथकंडों के अतिरिक्त देश में तेज गति से फैलता विदेशी बाजार है। ''यह भारत की सभ्यता है कि वह अमेरिका को आमंत्रित कर रहा है, यदि न भी कर रहा होता तो अमेरिका आता क्योंकि वह विश्व में शान्ति स्थापित करना चाहता है और यह उसके 'एजेंडे' का एक और पहला मुद्दा है।''(2) भारतीय पद्धति का भोजन अमेरिकी सैनिक ग्रहण नहीं करते है, उसके लिए पूरा बाजार तैयार किया जाता है, जहाँ हैम्बर्गर चिप्स से लेकर चिकन तक उपलब्ध है। भूमण्डलीकरण और खुला बाजार व्यवस्था के नाम पर जिस प्रकार विकसित देश विकासशील देशों को अपना निशाना बना रहे है, जिसका संकेत कहानी में सूक्ष्म रूप से कर दिया जाता है। पहले बाजार का निर्माण मनुष्य के जरूरतों के अनुसार किया जाता था, परंतु बाजारवादी, उपभोक्तावादी संस्कृति में मनुष्य की जरूरतों को बाजार के अनुकूल ढ़ाली जा रही हैं।

असगर वजाहत साहब ने एक साथ कई मुद्दों को उठाया है। किस प्रकार पत्रकारिता से संवेदना लुप्त होते जा रही है। जो अपनी चैनल की टी.आर.पी. बढ़ाने के लिए, एक आदमी की खबर

को दिखाने तक का प्रत्यन नहीं करते। जिस दिन कुत्ते के पिल्ले मिल जाते हैं, सारा देश खुशी, उल्लास, जश्न मना रहा होता है। उसी दिन उसी थाने में एक सिरकटी लाश आती है। जिसे कोई देखता तक नहीं है, मीडिया वाले देखकर कन्नीकाट लेते है।। उसी समय थाने में एक औरत और तीन बच्चे आते है।, औरत अपने पति की सिरकटी लाश को पहचान लेती है, यह उसका पति ही था। औरत रो रही थी, पर मौज, मस्ती, आनन्द, उल्लास, जश्न, गीत–संगीत के माहौल उनकी आवाज कोई नहीं सुन रहा था। ''उसके बच्चे अपने फटे–पुराने कपड़ों में सहमें, सिकुड़े मुँह खोले मंच पर होनेवाले तमाशे में डुबे हुए थे। वे न अपनी माँ को देख रहे थे, न बाप की सिरकटी लाश को।''(3)

इसी संदर्भ में उनकी कहानी 'गिरफ्त' को देखा जा सका है। इस कहानी में भी उन्होंने सूक्ष्म रूप से भूमण्डलीकरण की साजिशों को पर्दाफाश किये है। आज के समय में पूरा विश्व बाजारीकृत होते जा रहा है। बाजार की गिरफ्त से समाज का कोई भी क्षेत्र आज अछूता नहीं रहा। पूँजी को बटोरने में आज सब व्यस्त है। अस्पताल भी इसके लिए कोई अपवाद नहीं हैं।

हमारे देश की बेबुनियाद महानता पर लेखक ने व्यंग्य किया है। हमारे देश की हर चीज महान हैं। हमारी परम्पराएं भी महान है। हमारी महान परम्पराओं में एक परम्परा यह भी है कि सभी दिवंगत जनों को हम महान समझते है।। कहानी का मुख्य पात्र है 'मल्लू' जो निम्नवर्ग का प्रतिनिधित्व करती है, जो पूँजी के लिए कुछ भी करने को तैयार है। वो हेराफेरी कर दिन गुजारता था, हेराफेरी नहीं चलने पर खून बेचता था। जिस दिन खून बेचता था उस दिन पूरा अद्धा पीता था। पीकर आने पर अपनी सारी ताकत पत्नी को मारने–कूटने और बच्चों को गाली देने में निकालता था। किसी ने उसे बता दिया कि शराब में बड़ी ताकत होती है। मोहल्लें वाले से भी बराबर लड़ता रहता था। खून देने के बाद दौरान एक दिन मल्लू मर गया। मरने के मल्लू महान हो गया। नेक इंसान बन गया। क्योंकि हमारे देश में मरने के बाद बुरे आदमी भी महान हो जाते हैं। राजनेता की पुण्यतिथि पर तरह–तरह के कार्यक्रम आयोजित होते है। ''दिल्ली में व्यापक शिविर एक सरकारी अस्पताल की ओ.पी.डी. में लगाया गया। झड़ियाँ, झंडे, गमले, सजावटी गेट, बन्दनवार लगाए गए। ओ.पी. डी. मरीजों के लिए बंद कर दी गई।''(4) शिविर को अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति देने के लिए दूरदर्शन की विशेष कैमरा टीम आ गई। विदेशी समाचार एजेन्सियों की टीमें आ गई। गोरे संवाददाताओं ने रंग जमा दिया। रक्तदान शिविर का उद्घाटन करने के लिए लघु–उप–राज्यमंत्री आते हैं। रक्त देने के लिए स्वयंसेवक सफेद झलझलाते कुर्तो–पजामों और चमचमाती मारूतिकारो में आए। उसमें खून देने का इतना उत्साह था कि पोर–पोर खून टपक पड़ता था। उनके आने के पीछे यही उद्देश्य था कि वे विश्व भर में जाना जाए।

लघु–उप–राज्यमंत्री के आने से पहले एक विदेशी मंत्री आ पहुँचे और पिछली सीट से गीताजी उतरी। वे एक उभरते हुए उद्योगपति की दूसरी पत्नी थी। जिसे कुत्ता पालने तथा राजनीति का शौक था। रक्तदान शिविर में गीताजी रक्त देने के बहाने आयी थी। मंत्री जी सामने उन्होंने रक्त दिया। दूरदर्शन वाले ने छायांकन किया। मंत्रीजी के जाने बाद गीताजी जाने वाले थे कि उसे खबर मिली कि स्वयं प्रधानमंत्री शिविर में आने वाले हैं। गीताजी सुनते ही अस्पताल की ओर भागी और दोबारा रक्त देने की इच्छा प्रकट की। डॉक्टर कुछ देर के लिए सोच में पड़े, गीता जी ने इशारा किया। वो समझ गया, मल्लू को बुलाया। किस प्रकार नेता लोग मंत्री बनने के लिए दिखावा करते है। ''प्रधानमंत्री सबसे पहले गीता जी के बेड के पास आए। ओडियो–विडियो–सीडियो– पीडियो सब तरह के कैमरे चले प्रधानमंत्री ने फूलों का एक गुलदस्ता गीता जी को भेंट किया। गीता जी ने हाथ जोड़े। वे खून दे रही थी। नीचे मल्लू लेटा था। चादर से सब कुछ ढ़का हुआ था। लगता यही था कि टप–टप बोतल में गिरने वाला खून मल्लू का नहीं बल्कि गीता का है।''(5)

लेखक ने इस कहानी में बाजारवाद, पूँजीवाद की गिरफ्त में पड़े सरकारी कार्यालयों, अस्पताल वालों, राजनेताओं, स्वयंसेवकों व साधारण जनता पर व्यंग्य किया है। पूँजीवाद के इस दिखावे में मुख्य भूमिका निभाते है– डॉक्टर, मंत्री चपरासी, गीताजी आदि। अपनी स्वार्थ, धन, प्रतिष्ठा यश आदि की हवस में हमारा भारतवर्ष विघटन के कगार पर है। गीताजी का कथन है। ''आप भी अजीब डॉक्टर है। विज्ञान के इस युग में आप असंभव शब्द पर विश्वास करते हैं ....लानत है आप पर और आपके विज्ञान पर..... ।''(6)

बाजारवादी ताकतें जीवन की हर क्षेत्र को अपने भूख की आगोश में लेती जा रही है, तो ऐसे में खेल की भावना और खेल का मैदान इससे अलग कैसे रह सकते हैं। क्रिकेट अब सिर्फ खेल नहीं रह गया है, वह अब मार्केट बन गया करोड़ो–अरबों का। इसी को आधार बनाकर असगर वजाहत ने कहानी लिखा 'खेल का बूढ़ा मैदान गुस्से में है।' लेखक खेल की दुनिया में भावना, मर्यादा और नियम का किस प्रकार उल्लंघन किया जा रहा है, खासकर क्रिकेट में इसका उल्लेख इन्होंने यहाँ किया है। आई.पी. एल. संस्करण का मूल आधार ही बाजार है। जिसमें खेल भावना की कोई जगह नहीं है, प्रस्तुतिकरण और ग्लैमर की ही प्रमुखता रहती है। ग्लैमर में रचे–बचे खेल मे खिलाड़ियों की बोली लगायी जाती है। ऐसे खेल का बूढ़ा मैदान गुस्से में हैं तो कोई आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि उनकी खेल भावना को आहत पहुँचा है। खेल का बूढ़ा मैदान गुस्से में है शायद इसलिए कि वह बूढ़ा हो चुका है। खेल की नई रंगीनियों उन्हें स्वीकार नहीं है। लेखक ने इस बात को दिखाया है कि खेल के कांसेप्ट में बहुत बड़ा फर्क आया है, लोगों की अपेक्षाएँ इतनी बढ़ गई है कि खिलाड़ी हारना बर्दाश्त नहीं कर सकते। ''टीम के विश्वविजेता बन जाने पर पूरे प्रदेश में जश्न का माहौल था, खिलाड़ियों को तरह–तरह के पुरस्कार देने की घोषणा की जा रही थी किन्तु टीम के कप्तान को डर लग रहा था कि अगली बार हम हार गए तो..... ।''(7)

लेखक इस पर व्यंग्य करते हुए लिखता है, खेल के मैदान की आँख से एक आँसू निकलकर विजय उत्सव में शामिल हो गया। खेल के मैदान का यें वे आँसू है जहाँ खेल की अपना मर्यादा, आदर्श, नियम, नैतिकता थे। अब वहाँ, बाजार के चंगुल ने अपने गिरफ्त में लेकर बूरी तरह घायल कर दिया है।

इसी तरह की एक उनकी कहानी है 'विकसित देश की पहचान' जिसमें कहानीकार भारत जैसे विकासशील देशों के अमरीका जैसे विकसित देशों का अंधानुकरण करने की मानसिकता पर व्यंग्य किया गया है। किस प्रकार विकसित देश अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए हथियारों का निर्माण करते हैं। वे अपना नंगापन ढ़कने के लिए हथियारों का निर्माण करते हैं। भारत जैसे देश अपना भूखमरी मिटाये बिना सरकार नये–नये हथियारों के निर्माण में अपना पूरा पैसा खर्च करती है। असगर वजाहत ने गुरु और हरिराम संवाद के माध्यम से लघु कथा कई भागों में लिखा है। वैश्वीकरण की परिप्रेक्ष्य में इस कहानी के अंश को देखा जा सकता है।––

''गुरु : विकसित देश की कोई पहचान बताओ, हरिराम।
ळरिराम : विकसित देश विकासशील देशों को दान देते है।।
गुरु : और फिर?
हरिराम : फिर कर्ज देते हैं
गुरु : और फिर?
हरिराम : फिर ब्याज के साथ कर्ज देते हैं।
गुरु : और फिर ?
हरिराम : और फिर विकसित देश विकासशील देशों को विकसित मान लेते हैं।''(8)

वैश्वीकरण को लेखक ने उनके विकृत रूप के साथ उकेरा है। वैश्वीकरण की दुनिया में रिश्तों का भी कोई महत्त्व नहीं है, मनुष्य ने एक–एक रिश्ते को बाजारवाद में बदल दिया है। इस तरह लेखक ने वैश्वीकरण के बहुत सारे गंभीर मुद्दों को उठाया है। इसी को याद करते उनकी कहानी 'श्री टी.पी. देव की कहानियाँ याद आती है, जो विशेष उल्लेखनीय है। जिसमें आज की भारतीय संस्कृति की द्वन्द्वात्मक पक्षों पर व्यंग्य है। यह कहानी औपनिवेशिक संदर्भ में प्रतिरोध उत्पन्न करने वाली है, आज किस प्रकार आदमी इस नव उपनिवेशी दौर में अपने आप से बहुत दूर होते जा रहे हैं। आदमी किस प्रकार अपनी स्थिति–परिस्थिति से कटा हुआ है। इसका यहाँ वर्णन मिलता है। महत्त्वाकांक्षा ने मानव की नैतिकता का ह्रास किया है। प्रतियोगिता वृत्ति अपने चरम पर हैं, जिंदगी जीने के व्यस्तता में वे अपने निजी सुखों–दुखों से काफी दूर होते जा रहा है। आदमी किस तरह एक मशीनी जिंदगी जीने को बाध्य है। सुबह आठ बजे ऑफिस जाता है, शाम में छः बजे घर पहुँचते है।, चाय पीते है, टी.वी. देखते है, खाना खा कर सो जाते हैं। उसे ये तक याद नहीं की वह आखिरी बार कब हँसा था। ''अचानक पता नहीं कैसे, एक दिन उन्होंने सोचा कि पिछली बार वे कब हँसे थे? उन्हें याद नहीं आया। सोचते–सोचते थक गए और पता न चला, तो उन्होंने अपनी डायनियाँ, कागज–पत्र उलट–पुलट कर देखे, पर कहीं यह दर्ज न था कि पिछली बार कब हँसे थे।''(9) उनकी दूसरी कहानी में लेखक ने दिखाया है।, किस प्रकार मनुष्य टेक्नोलॉजी सुविधाओ का गुलाम होते जा रहे है। भूमण्डलीकरण के इस दौर में विज्ञापन उनका अभिन्न अंग बन गया है। भूमण्डलीकरण के इस माहौल में आदमी रिश्तों–नातों को भी भूल गया है, अपनों तक को नहीं पचहतानते। ''एक दिन टी.पी.देव के टेलीफोन की घंटी बजी। उन्होंने फोन उठाया उधर से आवाज आई–''मैं तुम्हारा पिता बोल रहा हूँ।'' टी.पी. देव बोले, ''क्षमा करें।'' गलत नम्बर मिल गया।'' उन्होंने फोन बन्द कर दिया।''(10) आगे की कहानियों में लेखक ने लिखा है कि किस प्रकार मनुष्य सब कुछ छोड़कर अर्थ–केन्द्रित बनता जा रहा है। उन्हें हर व्यवहार में बाजारीकृत, व्यापारीकृत की प्रवृति द्रष्टव्य है। ऐसी ही उनकी एक कहानी है, 'आग' जिसमें भुखमरी से पीड़ित एक परिवार का चित्रण है, जो एक प्रतिकात्मक कहानी है। घर में आग लगी हुई हैं, समाचार सुनकर लेखक बुद्धिजीवी, पत्रकार आदि सब अपना दुख प्रकट करने आया और चला गया। इसी बीच दमकल वाले आये, और चिंतित होकर बोले–यह आग इसी तरह लग रहे इसी में देश की भलाई है। इसी बच विशेषज्ञों की टीम आई और आग देखकर बोले इतनी भिषण आग इसका को निर्यात हो सकता है। भूमण्डलीकरण के इस दौर में मनुष्य की उपभोक्तावादी वृति अपने चरम पर है जो भुख को भी उपभोग में बदलने को तत्पर है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि असगर वजाहत ने समकालीन समाज की विभिन्न विसंगतियों को अपनी कहानी में उठाया है। मीडिया, बाजारवाद, साम्प्रदायिकता, राजनीति भूमण्डलीकरण, वैश्वीकरण आदि जैसे विभिन्न ज्वलंत मुद्दों को अपनी कहानी में प्रस्तुत किया है। असगर जी अपनी छोटी–छोटी कहानियों में व्यंग्य के माध्यम से भूमण्डलीकरण वैश्वीकरण आदि जैसे गंभीर विषय पर अपना लेखनी चलाया है। जो एक सजग, जागरूक और विशिष्ट कहानीकार ही कर सकता है।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, डॉ. अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण–2009, पृ.–372
2. डेमोक्रेसिया (तमाशे में डूबा देश), असगर वजाहत, राजकमल प्रकाशन, पृ.–28
3. वही, पृ.–30
4. मैं हिन्दू हूँ, (गिरफ्त), असगर वजाहत, राजकमल पेपरबैक्स, तीसरा संस्करण–2016
5. वही, पृ.–31
6. वही, पृ.–29–30
7. बनारस जन, पल्लव, पृ.–272
8. मैं हिन्दू हूँ (विकसित देश की पहचान), असगर वजाहत , राजकमल पेपरबैक्स, तीसरा संस्करण–2016, पृ.–118
9. मेरी प्रिय कहानियाँ, (टी.पी.देव की कहानियाँ), असगर वजाहत, राजपाल एण्ड सन्ज, पृ.–124
10. वही, पृ.–126